भारत-फ्रांस संबंधों की उज्ज्वल संभावनाएँ

लेखक - मंजीत कृपलानी (सह-संस्थापक और कार्यकारी निदेशक, गेटवे हाउस, मुंबई)
एवं जॉन सीमैन (रिसर्च फेलो, सेंटर फॉर एशियन स्टडीज, इफ्री, पेरिस)

यह आलेख सामान्य अध्ययन प्रश्न पत्र-II (अंतर्राष्ट्रीय संबंध) से संबंधित है।

इंडियन एक्सप्रेस

07 मई, 2022

प्रधानमंत्री मोदी की यात्रा ने संबंधों को मजबूत किया है और सहयोग के नए क्षेत्रों पर प्रकाश डाला है।

4 मई को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की फ्रांस यात्रा 2015 के बाद से उनकी 5वीं और इस तरह की 10वीं उच्च स्तरीय द्विपक्षीय यात्रा है।

इस बार, फ्रांसीसी और भारतीय नेताओं के बीच आदान-प्रदान विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण रहा। उदाहरण के लिए, फ्रांस ने संभावित भारत-यूरोपीय संघ मुक्त व्यापार समझौता और रूस-यूक्रेन संकट पर यूरोपीय संघ की स्थिति पर यूरोपीय संघ (ईयू) के मामले का प्रतिनिधित्व किया। इन दो बहुपक्षीय विषयों पर चर्चाओं में द्विपक्षीय शक्ति और विश्वास स्पष्ट था।

द्विपक्षीय स्तर का आदान-प्रदान कहीं अधिक आसान था, क्योंकि पेरिस और दिल्ली में पूरक और अभिसरण हितों की एक विस्तृत श्रृंखला है। वास्तव में, वे लंबे समय से विश्वसनीय भागीदार रहे हैं और साथ ही दोनों एक जरूरतमंद दोस्त (उदाहरण के लिए, हाल ही में 2019 तक जब फ्रांस में निर्मित पहला राफेल विमान भारत आना) भी हैं।

वर्तमान समय में भू-राजनीतिक स्थिति के संचालन में यूक्रेन संकट से उत्पन्न अशांति से परे, भारत और फ्रांस दोनों ही रणनीतिक स्वायत्तता बनाए रखने में विश्वास करते हैं एवं भौगोलिक डोमेन में वैश्विक जोखिमों की साझा समझ रखते हैं। रक्षा, आतंकवाद-निरोध और हिंद-प्रशांत क्षेत्र पर पहले से ही उच्चस्तर वाली भारत-फ्रांस राजनीतिक वार्ता चल रही है। दोनों देश अब 21वीं सदी के डिजिटल, साइबर, हरित ऊर्जा, नीली अर्थव्यवस्था और महासागर विज्ञान एवं अंतरिक्ष जैसे मुद्दों पर सहयोग के साथ आगे बढ़ रहे हैं। दोनों देश उन्नत कौशल रखते हैं और इन क्षेत्रों में समान सोच रखते हैं और व्यापार तथा निवेश को बढ़ा सकते हैं और साथ में बाधित आपूर्ति श्रृंखला का पुनर्निर्माण कर सकते हैं।

वे अपनी संबंधित निर्भरता को अच्छी तरह समझते हैं, खासकर चीन, रूस और अमेरिका के संबंध में। यहाँ, भारत अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था में अधिक से अधिक प्रचलित होने वाले टकराव की प्रवृत्ति को कम करने के लिए एक महत्त्वपूर्ण राजनयिक भूमिका निभा सकता है। दोनों मौजूदा संघर्षों के सबसे बुरे परिणामों से इंडो-पैसिफिक को बचाने के लिए काम कर सकते हैं।

सहयोग के दो क्षेत्र विशेष रूप से उज्ज्वल हैं, जिसमें से पहला है ऊर्जा और दूसरा है डिजिटल प्रौद्योगिकी। फ्रांस दोनों क्षेत्रों में विशेषज्ञता के साथ एक महत्त्वपूर्ण वैश्विक शक्ति है।

डिजिटल तकनीक में, फ्रांसीसी कंपनियाँ लंबे समय से भारत में सक्रिय हैं, जो उनकी दिन-प्रतिदिन की गतिविधियों के साथ-साथ अनुसंधान एवं विकास और नवाचार के लिए एक महत्त्वपूर्ण केंद्र है। उदाहरण के लिए, फ्रांसीसी तकनीकी सेवा बहुराष्ट्रीय एटोस, भारत को सुपरकंप्यूटिंग हार्डवेयर और क्वांटम कंप्यूटिंग सिमुलेशन सॉफ्टवेयर प्रदान करती है। हाल ही में दोनों देशों के थिंक टैंकों ने मुंबई में गेटवे हाउस और पेरिस में इफ्री द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित ट्रैक 1.5 डायलॉग ने फ्रांसीसी अर्थव्यवस्था के लिए बैंगलोर के महत्त्व को उजागर किया है। फ्रांस के पास भारतीय इंजीनियरों के लिए एक विशेष तकनीकी वीजा भी है, जो मजबूत आदान-प्रदान को सक्षम बनाता है।

डिजिटल सहयोग को कई तरह से बढ़ाया जा रहा है। मैक्रों और मोदी साइबर सुरक्षा और सार्वजनिक डिजिटल बुनियादी ढाँचे के मानकों के निर्माण पर हाथ मिलाने पर सहमत हुए हैं। लेकिन डिजिटल संप्रभुता के क्षेत्र में और भी बहुत कुछ किया जा सकता है, जहाँ भारत-फ्रांस के लिए एक संभावित मॉडल है, जहाँ खुले प्लेटफॉर्म और ओपन-सोर्स सार्वजनिक सामान का उपयोग किया जाता है- जैसे, इंडिया स्टैक और एमओएसआईपी (MOSIP) विनियमन, विशेष रूप से व्यक्तिगत डेटा सशक्तिकरण और सुरक्षा, स्वास्थ्य डेटा तथा स्वास्थ्य तकनीक।

फ्रांस और भारत को अब डिजिटल प्लेटफॉर्म को हथियार बनाने से रोकने और महत्त्वपूर्ण बुनियादी ढाँचे के खतरों को रोकने के लिए निवेश करना चाहिए। उन्हें अपनी अनूठी ताकत का उपयोग करना चाहिए, जिसमें भारत बड़े पैमाने पर ओपन-सोर्स प्लेटफॉर्म, फाउंडेशनल आईडी, आईटी सेवाओं और फिनटेक की अवधारणा की तैनाती कर सकता है और एआई, साइबर, क्वांटम टेक्नोलॉजी, डेटा सशक्तिकरण और सुरक्षा में फ्रांस, दुनिया के लिए अगली पीढ़ी के समाधान तैयार कर सकता है। यह बहुपक्षीय रूप से भी किया जा सकता है, विशेष रूप से फ्रैंकोफोन अफ्रीका और इंडो-पैसिफिक में, जो आर्थिक और राजनीतिक रूप से महँगी चीनी और अमेरिकी स्वामित्व वाली तकनीकी प्रणालियों से स्वतंत्र होने के लिए संघर्ष कर रहे हैं।

ऊर्जा पर, हरित ऊर्जा का मुद्दा मजबूत होता जा रहा है क्योंकि बढ़ती लागत क्रय शक्ति और उद्योग प्रतिस्पर्धा को कमजोर करती है। पारंपरिक ऊर्जा स्रोतों में कम निवेश के साथ पेट्रोलियम इसके लिए मुख्य रूप से जिम्मेदार है। मौजूदा संकट यूरोप को अपने आर्थिक मॉडल पर पुनर्विचार करने या यहाँ तक कि नए सिरे से आविष्कार करने और पवन, सौर पीवी, बायोमीथेन, ताप पंप, परमाणु तथा स्वच्छ हाइड्रोजन जैसे कम कार्बन विकल्पों में निवेश में तेजी लाने के लिए मजबूर कर रहा है।

भारत और फ्रांस ने दिखाया है कि वे अक्षय ऊर्जा के विकास में एक साथ काम कर सकते हैं, उदाहरण के लिए अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन के माध्यम से। दोनों हाइड्रोजन को एक गंभीर विकल्प के रूप में भी पहचानते हैं। खाद्य सुरक्षा के लिए ऊर्जा से अधिक हाइड्रोजन महत्वपूर्ण है क्योंकि इसका उपयोग यूरिया उर्वरक बनाने के लिए किया जाता है। इसका उपयोग भारी ट्रकों के लिए ईंधन के रूप में भी किया जा सकता है, जो भारत के तेल की खपत का 40 प्रतिशत हिस्सा है। लेकिन भारत को हरित हाइड्रोजन बुनियादी ढाँचे और पारिस्थितिकी तंत्र के लिए $ 1 ट्रिलियन की आवश्यकता है, जिसमें ग्रिड में बड़े पैमाने पर निवेश शामिल है, जहाँ फ्रांस ने यूरोपीय संघ के ग्रिड का विकसित हिस्सा होने के साथ अपनी विशेषज्ञता साबित की है।

भारत के पास बाजार है, फ्रांस के पास तकनीक तथा पूँजी है और यूरोपीय संघ के पास हरित हाइड्रोजन में संक्रमण को चलाने के लिए राजनीतिक इच्छाशक्ति एवं प्रोत्साहन है। एयर लिक्विड, एंजी और टोटल एनर्जी जैसी प्रमुख फ्रांसीसी बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ पहले से ही हाइड्रोजन ऊर्जा पर काम कर रही हैं और भारतीय भागीदारों के साथ पायलट परियोजनाओं की योजना बनाई जा सकती है।

मोदी और मैक्रों क्षमता विस्तार के लिए औद्योगिक साझेदारी स्थापित करने पर सहमत हुए हैं। आगे के विकास का पता लगाने के लिए सक्रिय कॉर्पोरेट इरादे की आवश्यकता है। यदि पूँजी की लागत कम की जाती है, तो भारत में हरित ऊर्जा के कई खरीददार हैं।

मोदी और मैक्रों के बीच प्रगतिशील मुलाकात हुई है। दोनों देशों का एक-दूसरे के लिए और दुनिया के लिए रणनीतिक महत्त्व जल्द ही दिखाई देगा।

संभावित प्रश्न (प्रारंभिक परीक्षा)

प्र. भारत-फ्रांस संबंध के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर चर्चा कीजिए:-

1. अभ्यास शक्ति (स्थल सेना) भारत, फ्रांस और जर्मनी के बीच एक वार्षिक युद्ध अभ्यास है।
2. स्कॉर्पीन पनडुब्बियों का निर्माण भारत और फ्रांस की कंपनियों के द्वारा किया जा रहा है।
3. फ्रांस हिंद महासागर रिम एसोसिएशन (IORA) का 23वाँ सदस्य है।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?

(क) 1 और 2
(ख) 2 और 3
(ग) केवल 3
(घ) केवल 2

Expected Question (Prelims Exams)

Q. Consider the following statements in the context of Indo-French relations:-

1. Exercise Shakti (Army) is an annual warfare exercise between India, France and Germany.
2. Scorpene submarines are being manufactured by companies from India and France.
3. France is the 23rd member of the Indian Ocean Rim Association (IORA).

Which of the above statements is/are correct?

(a) 1 and 2
(b) 2 and 3
(c) 3 only
(d) 2 only

संभावित प्रश्न (मुख्य परीक्षा)

प्र. फ्रांस भारत के लिए एक महत्त्वपूर्ण भागीदार है। भारत और फ्रांस के बीच द्विपक्षीय संबंधों के प्रमुख पहलुओं को रेखांकित करते हुए चर्चा करें कि समय के साथ भारत-फ्रांस संबंध कैसे विकसित हुए हैं? (250 शब्द)

Q. France is an important partner for India. While outlining the key aspects of bilateral relations between India and France, discuss how India-France relations have evolved over time?

(250 Words)

नोट :- अभ्यास के लिए दिया गया मुख्य परीक्षा का प्रश्न आगामी UPSC मुख्य परीक्षा को ध्यान में रख कर बनाया गया है। अतः इस प्रश्न का उत्तर लिखने के लिए आप इस आलेख के साथ-साथ इस टॉपिक से संबंधित अन्य स्रोतों का भी सहयोग ले सकते हैं।